1. दिलाराम बाप की याद द्वारा तीनों कालों को अच्छा बनाने वाले इच्छा मुक्त भव
2. समय की रफ्तार प्रमाण सर्व प्राप्तियों से भरपूर रह मायाजीत बनने वाले तीव्र पुरुषार्थी भव
3. सदा सेफ्टी के स्थान पर रह निर्भय और निश्चिंत रहने वाले बापदादा के दिलतख्तनशीन भव
4. सर्व फरियादों के फाइल को समाप्त कर फाइन बनने वाले कर्मयोगी भव
5. ब्राह्मण जीवन में सदा मेहनत से मुक्त रहने वाले सर्व प्राप्ति सम्पन्न भव
6. शुद्ध फीलिंग द्वारा फ्लू की बीमारी को खत्म कर वरदानों से पलने वाले सफलतामूर्त भव
7. संगमयुग पर श्रेष्ठ मत द्वारा श्रेष्ठ गति को प्राप्त करने वाले प्रत्यक्ष फल के अधिकारी भव
8. समर्थ संकल्पों द्वारा जमा का खाता बढ़ाने वाले होलीहंस भव
9. योग ज्वाला द्वारा विश्व के किचड़े को भस्म करने वाले विश्व परिवर्तक भव
10. एक की स्मृति द्वारा एकरस स्थिति बनाने वाले ऊंच पद के अधिकारी भव
11. इस मरजीवा जीवन में सदा सन्तुष्ट रहने वाले इच्छा मात्रम् अविद्या भव
12. मन को बिजी रखने की कला द्वारा व्यर्थ से मुक्त रहने वाले सदा समर्थ स्वरूप भव
13. बाप के कदम पर कदम रखते हुए परमात्म दुआयें प्राप्त करने वाले आज्ञाकारी भव
14. छोटी-छोटी अवज्ञाओं के बोझ को समाप्त कर सदा समर्थ रहने वाले श्रेष्ठ चरित्रवान भव
15. बालक और मालिकपन के बैलेन्स से पुरुषार्थ और सेवा में सदा सफलतामूर्त भव
16. दु:ख के चक्करों से सदा मुक्त रहने और सबको मुक्त करने वाले स्वदर्शन चक्रधारी भव
17. परमात्म प्यार की छत्रछाया में सदा सेफ रहने वाले दु:खों की लहरों से मुक्त भव
18. अपने मस्तक पर श्रेष्ठ भाग्य की लकीर देखते हुए सर्व चिंताओं से मुक्त बेफिक्र बादशाह भव
19. हर बात में मुख से वा मन से बाबा-बाबा कह मैं पन को समाप्त करने वाले सफलता मूर्त भव
20. रूहानियत की शक्ति द्वारा दूर रहने वाली आत्माओं को समीपता का अनुभव कराने वाले मा. सर्वशक्तिमान भव
21. संकल्प शक्ति द्वारा हर कार्य में सफल होने की सिद्धि प्राप्त करने वाले सफलतामूर्त भव
22. अपनी शक्तिशाली स्थिति द्वारा दान और पुण्य करने वाले पूज्यनीय और गायन योग्य भव
23. त्याग और तपस्या के वातावरण द्वारा विघ्न-विनाशक बनने वाले सच्चे सेवाधारी भव
24. सुख के सागर बाप की स्मृति द्वारा दु:ख की दुनिया में रहते भी सुख स्वरूप भव
25. बैलेन्स की विशेषता को धारण कर सर्व को ब्लैसिंग देने वाले शक्तिशाली, सेवाधारी भव
26. एकरस और निरन्तर खुशी की अनुभूति द्वारा नम्बरवन लेने वाले अखुट खजाने से सम्पन्न भव
27. बाह्यमुखता के रसों की आकर्षण के बन्धन से मुक्त रहने वाले जीवनमुक्त भव
28. सर्व पुराने खातों को संकल्प और संस्कार रूप से भी समाप्त करने वाले अन्तर्मुखी भव
29. दिनचर्या की सेटिंग और बाप के साथ द्वारा हर कार्य एक्यूरेट करने वाले विश्व कल्याणकारी भव

30. रूहानियत के साथ रमणीकता में आने वाले मर्यादा पुरूषोत्तम भव
31. बोल पर डबल अन्डरलाइन कर हर बोल को अनमोल बनाने वाले मास्टर सतगुरू भव
32. निश्चय की अखण्ड रेखा द्वारा नम्बरवन भाग्य बनाने वाले विजय के तिलकधारी भव
33. सदा निजधाम और निज स्वरूप की स्मृति से उपराम, न्यारे प्यारे भव
34. अपनी सर्व विशेषताओं को कार्य में लगाकर उनका विस्तार करने वाले सिद्धि स्वरूप भव
35. विशेषता देखने का चश्मा पहन सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाले विश्व परिवर्तक भव
36. साइलेन्स की शक्ति द्वारा नई सृष्टि की स्थापना के निमित्त बनने वाले मास्टर शान्ति देवा भव
37. समानता द्वारा समीपता की सीट ले फर्स्ट डिवीजन में आने वाले विजयी रत्न भव
38. सदा हर दिन स्व उत्साह में रहने और सर्व को उत्साह दिलाने वाले रूहानी सेवाधारी भव
39. सहनशक्ति का कवच पहन, सम्पूर्ण स्टेज को वरने वाले विघ्न जीत भव
40. निमित्त और नम्रचित की विशेषता द्वारा सेवा में फास्ट और फर्स्ट नम्बर लेने वाले सफलतामूर्त भव
41. अटेन्शन और चेकिंग की विधि द्वारा व्यर्थ के खाते को समाप्त करने वाले मा. सर्वशक्तिमान् भव
42. ऊंची स्टेज पर रह प्रकृति की हलचल के प्रभाव से परे रहने वाले प्रकृतिजीत भव
43. अमृतवेले के महत्व को जान महान बनने वाले विशेष सेवाधारी भव
44. अमृतवेले से लेकर रात तक मर्यादापूर्वक चलने वाले मर्यादा पुरुषोत्तम भव
45. समर्थ स्थिति के आसन पर बैठ व्यर्थ और समर्थ का निर्णय करने वाले स्मृति स्वरूप भव
46. भाग्य और भाग्य विधाता बाप की स्मृति में रह भाग्य बांटने वाले फ्राकदिल महादानी भव
47. ज्ञान को रमणीकता से सिमरण कर आगे बढ़ने वाले सदा हर्षित, खुशनसीब भव
48. स्वयं को बाप हवाले कर बुद्धि से भी सरेन्डर होने वाले डबल लाइट भव
49. प्युरिटी की पर्सनैलिटी और रॉयल्टी द्वारा बाप के समीप आने वाले देही-अभिमानी भव
50. सेवा के क्षेत्र में स्व-सेवा और सर्व की सेवा का बैलेन्स रखने वाले मायाजीत भव
51. श्रेष्ठ जीवन की स्मृति द्वारा विशाल स्टेज पर विशेष पार्ट बजाने वाले हीरो पार्टधारी भव
52. ब्राह्मण जीवन में सदा आनंद वा मनोरंजन का अनुभव करने वाले खुशनसीब भव
53. स्नेह और भावना के बंधन में भगवान को भी बांधने वाले गायन योग्य भव
54. समस्याओं रूपी पहाड़ को उड़ती कला द्वारा सेकण्ड में पार करने वाले सहज पुरुषार्थी भव
55. सदा भरपूरता की अनुभूति द्वारा टेढ़े रास्ते को सीधा बनाने वाले शक्ति अवतार भव
56. एक बाप के लव में लवलीन रह सर्व बातों से सेफ रहने वाले मायाप्रूफ भव
57. अपने बचे हुए तन-मन-धन को ईश्वरीय कार्य में लगाकर जमा करने वाले सदा सहयोगी भव
58. अपने शुभ चिंतन द्वारा वातावरण को शक्तिशाली बनाने वाले सदा सहयोगी सन्तुष्ट आत्मा भव
59. याद और सेवा के बैलेन्स द्वारा सर्व की ब्लैसिंग प्राप्त करने वाले सफलतामूर्त भव

60. न्यारे और प्यारे पन की विशेषता द्वारा बाप के प्रिय बनने वाले निरन्तर योगी भव
61. पुराने हिसाब-किताब को समाप्त कर सम्पूर्णता का समारोह मनाने वाले बन्धनमुक्त भव
62. चैलेन्ज और प्रैक्टिकल की समानता द्वारा स्वयं को पापों से सेफ रखने वाले विश्च सेवाधारी भव
63. खुशी के खजाने से सम्पन्न बन सदा खुश रहने और खुशी का दान देने वाले महादानी भव
64. सेवा का पार्ट बजाते पार्ट से न्यारे और बाप के प्यारे रहने वाले सहज योगी भव
65. मास्टर ज्ञान सूर्य बन सारे विश्व को सर्व शक्तियों की किरणें देने वाले विश्व कल्याणकारी भव
66. तीर्थ स्थान की स्मृति द्वारा सर्ब पापों से मुक्त होने वाले पुन्य आत्मा भव
67. स्वदर्शन चक्रधारी बन हर कर्म चरित्र के रूप में करने वाले मायाजीत, सफलतामूर्त भव
68. बिन्दू रूप में स्थित रह सारयुक्त, योगयुक्त, युक्तियुक्त स्वरूप का अनुभव करने वाले सदा समर्थ भव
69. बिन्दू की मात्रा के महत्व को जान बीती को बिन्दी लगाने वाले सहजयोगी भव
70. सर्व रूहानी खजानों से सम्पन्न बन सदा सन्तुष्ट रहने वाले आलराउण्ड सेवाधारी भव
71. रूहानियत में रहकर स्वमान की सीट पर बैठने वाले सदा सुखी, सर्व प्राप्ति स्वरूप भव
72. श्रेष्ठ कर्मधारी बन ऊंची तकदीर बनाने वाले पदमापदम भाग्यशाली भव
73. सहज विधि द्वारा विधाता को अपना बनाने वाले सर्व भाग्य के खजानों से भरपूर भव
74. हर कदम में पदमों की कमाई जमा करने वाले समझदार ज्ञानी तू आत्मा भव
75. कर्मक्षेत्र पर कमल पुष्प समान रहते हुए माया की कीचड़ से सेफ रहने वाले कर्मयोगी भव
76. सोचना, कहना और करना इन तीनों को समान बनाने वाले बाप समान सम्पन्न भव
77. अपने अनादि स्वरूप में स्थित रह सर्व समस्याओं का हल करने वाले एकान्तवासी भव
78. शान्ति की शक्ति द्वारा सर्व को आकर्षित करने वाले मास्टर शान्ति देवा भव
79. समेटने की शक्ति द्वारा पेटी बिस्तरा बंद करने वाले समय पर एवररेडी भव
80. महावीर बन बाप का साक्षात्कार कराने वाले वाहनधारी सो अलंकारधारी भव
81. अमृतवेले के फाउण्डेशन द्वारा सारे दिन की दिनचर्या को ठीक रखने वाले सहज पुरुषार्थी भव
82. इन्तजार को छोड़ इन्तजाम करने वाले वियोगी के बजाए सहयोगी सो सहजयोगी भव
83. "छोड़ो तो छूटो" इस पाठ द्वारा नम्बरवन लेने वाले उड़ता पंछी भव
84. स्वयं को संगमयुगी समझ व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तन करने वाली समर्थ आत्मा भव
85. बाप के राइट हैण्ड बन हर कार्य में सदा एवररेडी रहने वाले मास्टर भाग्य विधाता भव
86. एक के पाठ द्वारा निराकार, आकार को साकार में अनुभव करने वाले वरदानी मूर्त भव
87. सूर्यमुखी पुष्प के समान ज्ञान सूर्य के प्रकाश से चमकने वाले सदा सम्मुख और समीप भव
88. सम्पर्क में आने वाली आत्माओं को सदा सुख की अनुभूति कराने वाले मास्टर सुखदाता भव

89. सर्व संबंध एक बाप से जोड़कर माया को विदाई देने वाले सहजयोगी भव

90. एक बाप को अपना संसार बनाकर सदा हंसने, गाने और उड़ने वाले प्रसन्नचित भव

91. भ्रकुटी की कुटिया में बैठ अन्तर्मुखता का रस लेने वाले सच्चे तपस्वीमूर्त भव

92. शुद्ध मन और दिव्य बुद्धि के विमान द्वारा सेकण्ड में स्वीट होम की यात्रा करने वाले मा. सर्वशक्तिवान भव

93. तन मन और दिल की स्वच्छता द्वारा साहेब को राज़ी करने वाले सच्चे होलीहंस भव

94. तन को आत्मा का मन्दिर समझ उसे स्वच्छ बनाने वाले नम्बरवन श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा भव

95. आने और जाने के अभ्यास द्वारा बन्धनमुक्त बनने वाले न्यारे, निर्लिपत भव

96. रूहानी आकर्षण द्वारा सेवा और सेवाकेन्द्र को चढ़ती कला में ले जाने वाले योगी तू आत्मा भव

97. सम्बन्ध में सन्तुष्टता रूपी स्वच्छता को धारण कर सदा हल्के और खुश रहने वाले सच्चे पुरुषार्थी भव

98. न्यारेपन के अभ्यास द्वारा पास विद आनर होने वाले ब्रह्मा बाप समान भव

99. अपने हर कर्म द्वारा दिव्यता की अनुभूति कराने वाले दिव्य जीवनधारी भव

100.सरल संस्कारों द्वारा अच्छे, बुरे की आकर्षण से परे रहने वाले सदा हर्षितमूर्त भव

101.सर्व खजानों की सम्पन्नता द्वारा सम्पूर्णता का अनुभव करने वाले प्राप्ति स्वरूप भव

102.दृष्टि द्वारा शक्ति लेने और शक्ति देने वाले महादानी, वरदानी मूर्त भव

103.साइलेन्स की शक्ति द्वारा जमा के खाते को बढ़ाने वाले श्रेष्ठ पद के अधिकारी भव

104. ब्राह्मण जीवन में खुशी के वरदान को सदा कायम रखने वाले महान आत्मा भव

105. अनासक्त बन लौकिक को सन्तुष्ट करते भी ईश्वरीय कमाई जमा करने वाले राज़युक्त भव

106. सेवा द्वारा प्राप्त मान, मर्तबे का त्याग कर अविनाशी भाग्य बनाने वाले महात्यागी भव

107. अपनी जिम्मेवारियों के सब बोझ बाप को दे सदा निश्चिंत रहने वाले सफलता सम्पन्न सेवाधारी भव

108. सेवाओं में सदा सहयोगी बन सहजयोग का वरदान प्राप्त करने वाले विशेषता सम्पन्न भव

109. सहयोग की शुभ भावना द्वारा रूहानी वायुमण्डल बनाने वाले मास्टर दाता भव

110. बेहद के स्मृति स्वरूप द्वारा हद की बातों को समाप्त करने वाले अनुभवी मूर्त भव

111. अपनी सूक्ष्म शक्तियों को स्थापना के कार्य में लगाने वाले मास्टर रचयिता भव

112. अपने हर कर्म और बोल द्वारा चलते फिरते हर आत्मा को शिक्षा देने वाले मास्टर शिक्षक भव

113. अपने शक्ति स्वरूप द्वारा अलौकिकता का अनुभव कराने वाले ज्वाला रूप भव

114. सन्तुष्टता के सर्टीफिकेट द्वारा भविष्य राज्य-भाग्य का तख्त प्राप्त करने वाले सन्तुष्ट मूर्ति भव

115. वरदानों की दिव्य पालना द्वारा सहज और श्रेष्ठ जीवन का अनुभव करने वाले सदा खुशनसीब भव

116. कर्मभोग को कर्मयोग में परिवर्तन कर सेवा के निमित्त बनने वाले भाग्यवान भव

117. हर आत्मा के संबंध-सम्पर्क में आते सब प्रश्नों से पार रहने वाले सदा प्रसन्नचित भव

118. श्रीमत प्रमाण जी हजूर कर, हजूर को हाज़िर अनुभव करने वाले सर्व प्रापित सम्पन्न भव

119. ज्ञान और योग की शक्ति से हर परिस्थिति को सेकण्ड में पास करने वाले महावीर भव

120. सबको अमर ज्ञान दे अकाले मृत्यु के भय से छुड़ाने वाले शक्तिशाली सेवाधारी भव

121. हर शक्ति को आर्डर प्रमाण चलाने वाले मास्टर रचयिता भव

122. सदा उमंग-उत्साह के पंखों द्वारा उड़ती कला में उड़ने वाली श्रेष्ठ आत्मा भव

123. वैरायटी अनुभूतियों द्वारा सदा उमंग-उत्साह से भरपूर रहने वाले विघ्न जीत भव

124. किनारा करने के बजाए स्वयं को एडजेस्ट करने वाले सहनशीलता के अवतार भव

125. ज्ञान स्वरूप बन कर्म फिलासॉफी को पहचान कर चलने वाले कर्मबन्धन मुक्त भव

126. बाप को सामने रख ईष्या रूपी माया से बचने वाले विशेष आत्मा भव

127. अपसेट होने के बजाए हिसाब-किताब को खुशी-खुशी से चुक्तू करने वाले निश्चिंत आत्मा भव

128. हर बात में कल्याण समझकर अचल, अडोल महावीर बनने वाले त्रिकालदर्शी भव

129. दिव्य गुणों के सर्व अलंकारों से सज़े सजाये रहो तो अहंकार आ नहीं सकता

130. सेवा को बाप के आगे बुद्धि से अर्पण कर स्वयं निश्चिंत रहने वाले सफलता स्वरूप भव

131. विशेषताओं को सामने रख सदा खुशी-खुशी से आगे बढ़ने वाले निश्चयबुद्धि विजयी रत्न भव

132. श्रेष्ठ कर्म रूपी डाली में लटकने के बजाए उड़ता पंछी बनने वाले हीरो पार्टधारी भव

133. हदों से पार रह सबको अपने पन की महूसता कराने वाले अनुभवी मूर्त भव

134. समानता की भावना होते भी हर कदम में विशेषता का अनुभव कराने वाले विशेष आत्मा भव

135. कर्मयोग की स्टेज द्वारा कर्मभोग पर विजय प्राप्त करने वाले विजयी रत्न भव

136. सर्व प्रति शुभ कल्याण की भावना रख परिवर्तन करने वाले बेहद सेवाधारी भव

137. निश्चयबुद्धि बन लौकिक में अलौकिक भावना रखने वाले डबल सेवाधारी ट्रस्टी भव

138. सर्व प्राप्तियों की अनुभूति द्वारा माया को विदाई दे बधाई पाने वाले खुशनसीब आत्मा भव

139. स्नेह के सागर में समाकर मेरे पन की मैल को समाप्त करने वाले पवित्र आत्मा भव

140. खुशी की गोली वा इन्जेक्शन द्वारा स्वयं की दवाई स्वयं करने वाले नॉलेजफुल भव

141. लगन की अग्नि में सब चिंताओं को समाप्त करने वाले निश्चयबुद्धि निश्चिंत भव

142. ज्ञान अमृत की वर्षा द्वारा मुर्दे से महान बनने वाले मरजीवा भव

143. सच्ची दिल से साहेब को राज़ी करने वाले राज़युक्त, युक्तियुक्त, योगयुक्त भव

144. स्वउन्नति का यथार्थ चश्मा पहन एक्जैम्पुल बनने वाले अलबेलेपन से मुक्त भव

145. स्व-परिवर्तन द्वारा विश्व परिवर्तन के निमित्त बनने वाले श्रेष्ठ सेवाधारी भव

146. आज्ञाकारी बन बाप की मदद वा दुआओं का अनुभव करने वाले सफलतामूर्त भव

147. सदा अपनी श्रेष्ठ शान में रह परेशानियों को मिटाने वाले मास्टर सर्वशक्तिमान भव (27/5/13)

148. समेटने की शक्ति द्वारा सेकण्ड में फुलस्टॉप लगाने वाले नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप भव

149. निंदक को भी अपना मित्र समझ सम्मान देने वाले ब्रह्मा बाप समान मास्टर रचयिता भव

150. वायदों की स्मृति द्वारा फ़ायदा उठाने वाले सदा बाप की ब्लैसिंग के पात्र भव

151. स्वराज्य की सत्ता द्वारा विश्व राज्य की सत्ता प्राप्त करने वाले मास्टर सर्वशक्तिमान भव

152. सदा अपने को सारथी और साक्षी समझ देह-भान से न्यारे रहने वाले योगयुक्त भव

153. सारथी बन न्यारी और प्यारी स्थिति का अनुभव कराने वाले नम्बरवन सिद्धि स्वरूप भव

154. ब्रह्मा बाप को फॉलो कर फर्स्ट ग्रेड में आने वाले समान भव

155. अमृतवेले से रात तक याद के विधिपूर्वक हर कर्म करने वाले सिद्धि स्वरूप भव

156. मेरे पन को छोड़ ट्रस्टी बन सेवा करने वाले सदा सन्तुष्ट आत्मा भव

157. ब्राह्मण जन्म की विशेषता और विचित्रता को स्मृति में रख सेवा करने वाले साक्षी भव

158. बुद्धि को डायरेक्शन प्रमाण श्रेष्ठ स्थिति में स्थित करने वाले मास्टर सर्वशक्तिमान भव

159. सदा खुशी की खुराक खाने और खिलाने वाले खुशहाल, खुशनसीब भव

160. एकव्रता के राज़ को जान वरदाता को राज़ी करने वाले सर्व सिद्धि स्वरूप भव

161. वाचा के साथ मन्सा द्वारा शक्तिशाली सेवा करने वाले सहज सफलता मूर्त भव

162. मन्सा और वाचा के मेल द्वारा जादूमंत्र करने वाले नवीनता और विशेषता सम्पन्न भव

163. कर्म करते शक्तिशाली स्टेज पर स्थित हो रूहानी पर्सनैलिटी का अनुभव कराने वाले कर्मयोगी भव

164. हर एक की विशेषता को देखते उन्हें सेवा में लगाने वाले दुआओं के पात्र भव

165. निमित्त आत्माओं के डायरेक्शन के महत्व को जान पापों से मुक्त होने वाले सेन्सीबुल भव

166. समय प्रमाण रूप-बसन्त अर्थात् ज्ञानी व योगी तू आत्मा बनने वाले स्व शासक भव

167. अपने आदि अनादि स्वरूप की स्मृति द्वारा सर्व बन्धनों को समाप्त करने वाले बन्धनमुक्त स्वतन्त्र भव

168. मन्सा और वाचा की शक्ति को यथार्थ और समर्थ रूप से कार्य में लगाने वाले तीव्र पुरुषार्थी भव

169. परिस्थितियों को साइडसीन समझ पार करने वाले स्मृति स्वरूप समर्थ आत्मा भव

170. स्मृति स्वरूप बन विस्मृति वालों को स्मृति दिलाने वाले सच्चे सेवाधारी भव

171. जीवन में दिव्यगुणों के फूलों की फुलवाड़ी द्वारा खुशहाली का अनुभव करने वाले एवरहैप्पी भव

172. मन की खुशी द्वारा बीमारियों को दूर भगाने वाले एवरहेल्दी भव

173. स्व परिवर्तन और विश्व परिवर्तन की जिम्मेवारी के ताजधारी सो विश्व राज्य के ताजधारी भव
174. अविनाशी सुहाग और भाग्य के तिलकधारी सो भविष्य के राज्य तिलकधारी भव
175. दुआ और दवा द्वारा तन-मन की बीमारी से मुक्त रहने वाले सदा सन्तुष्ट आत्मा भव
176. व्यर्थ संकल्पों को समर्थ में परिवर्तित कर सहजयोगी बनने वाली समर्थ आत्मा भव
177. माया को दुश्मन के बजाए पाठ पढ़ाने वाली सहयोगी समझ एकरस रहने वाले मायाजीत भव
178. बाप समान हर आत्मा पर कृपा वा रहम करने वाले मास्टर रहमदिल भव
179. शीतला देवी बन सर्व कर्मेन्द्रियों को शीतल शान्त बनाने वाले स्वराज्य अधिकारी भव
180. योग की धूप में आंसुओं की टंकी को सुखाकर रोना प्रूफ बनने वाले सुख स्वरूप भव
181. परखने वा निर्णय करने की शक्ति द्वारा सेवा में सफलता प्राप्त करने वाले सफलतामूर्त भव
182. सन्तुष्टता द्वारा सर्व से प्रशन्सा प्राप्त करने वाले सदा प्रसन्नचित भव
183. परीक्षाओं और समस्याओं में मुरझाने के बजाए मनोरंजन का अनुभव करने वाले सदा विजयी भव
184. मनमनाभव की विधि द्वारा बन्धनों के बीज को समाप्त करने वाले नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप भव
185. सर्व सम्बन्धों से बाप को अपना बनाकर एकरस रहने वाले नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप भव
186. हर सेकण्ड स्वयं को भरपूर अनुभव कर सदा सेफ रहने वाले स्मृति सो समर्थ स्वरूप भव
187. अव्यभिचारी और निर्विघ्न स्थिति द्वारा फर्स्ट जन्म की प्रालब्ध प्राप्त करने वाले समीप और समान भव
188. दिव्य बुद्धि की लिफ्ट द्वारा तीनों लोकों की सैर करने वाले सहजयोगी भव
189. त्याग और तपस्या के सहयोग से सेवा में सफलता प्राप्त करने वाले निरन्तर तपस्वीमूर्त भव
190. साक्षीपन की स्थिति द्वारा हीरो पार्ट बजाने वाले सहज पुरुषार्थी भव
191. बाप के दिये हुए खजाने को मनन कर अपना बनाने वाले सदा हर्षित, सदा निश्चिंत भव
192. लौकिक वृत्ति दृष्टि का परिवर्तन कर अलौकिकता का अनुभव करने वाले ज्ञानी तू आत्मा भव
193. सर्वशक्तिमान के साथ की अनुभूति द्वारा सर्व प्राप्तियों का अनुभव करने वाले तृप्त आत्मा भव
194. परिस्थितियों को साइडसीन समझ पार कर आगे बढ़ने वाले मास्टर सर्वशक्तिमान भव
195. निरन्तर योगी और पवित्र बन सर्व विकारों को विदाई देने वाले शक्ति स्वरूप, पूज्य स्वरूप भव
196. दृढ़ संकल्प द्वारा व्यर्थ की बीमारी को सदा के लिए खत्म करने वाले सफलतामूर्त भव
197. आवाज से परे श्रेष्ठ स्थिति में स्थित रह शान्ति की शक्ति का अनुभव करने वाले मा. बीजरूप भव
198. समाने और समेटने की शक्ति द्वारा एकाग्रता का अनुभव करने वाले सार स्वरूप भव
199. चेहरे द्वारा सम्पन्न स्थिति की झलक और फलक दिखाने वाले सर्व प्राप्ति स्वरूप भव
200. विजय के उमंग-उत्साह द्वारा नाउम्मींदी को उम्मीदों में परिवर्तन करने वाले निश्चयबुद्धि भव

201. बुद्धि द्वारा शुद्ध संकल्पों का भोजन स्वीकार करने वाले सदा स्वच्छ होलीहंस भव

202. सेवा की भावना द्वारा अमर फल प्राप्त करने वाले सदा माया के रोग से मुक्त भव

203. सदा मिलन के झूले में झूलने वाले तत त्वम् के वरदानी बाप समान भव

204. सम्पूर्णता द्वारा सम्पन्नता की प्रालब्ध का अनुभव करने वाले सर्व झमेलों से मुक्त भव

205. सदा साक्षी स्थिति में स्थित रह निर्लेप अवस्था का अनुभव करने वाले सहजयोगी भव

206. सुख स्वरूप बन सारे विश्व में सुख की किरणें फैलाने वाले मास्टर ज्ञान सूर्य भव

207. खुशी के खजाने से अनेक आत्माओं को मालामाल बनाने वाले सदा खुशनसीब भव

208. सदा बाप समान बन अपने सम्पन्न स्वरूप द्वारा सर्व को वरदान देने वाले वरदानी मूर्त भव

209. अपने कर्म और स्थिति द्वारा ब्रह्मा बाप को स्पष्ट दिखाने वाले मास्टर ब्रह्मा भव

210. मालिकपन की स्थिति में रह प्रकृति द्वारा सहयोग की माला पहनने वाले प्रकृतिजीत भव

211. इच्छाओं रूपी मृगतृष्णा के पीछे भागने के बजाए सच्ची कमाई जमा करने वाले इच्छा मात्रम् अविद्या भव

212. कराने वाला करा रहा है - इस स्मृति द्वारा निमित्त बन हर कर्म करने वाले बेपरवाह बादशाह भव

213. कोई भी ड्युटी बजाते हुए स्वयं को सेवाधारी समझ सेवा करने वाले डबल फल के अधिकारी भव 214. रूहानी प्रसन्नता के वायब्रेशन द्वारा सर्व को शान्ति और शक्ति की अनुभूति कराने वाले सर्व प्राप्ति स्वरूप भव

215. सर्व खजानों को स्वयं में समाकर, दिलशिकस्त-पन वा ईर्ष्या से मुक्त रहने वाले सदा प्रसन्नचित भव

216. ब्राह्मण जीवन की विशेषता को जानकर उसे कार्य में लगाने वाले सर्व विशेषता सम्पन्न भव

217. स्वराज्य अधिकारी बन कर्मेन्द्रियों को आर्डर प्रमाण चलाने वाले अकालतख्त सो दिलतख्तनशीन भव

218. कर्मयोगी बन हर कार्य को कुशलता और सफलता पूर्वक करने वाले चिंतामुक्त भव

219. बाप के डायरेक्शन प्रमाण सेवा समझ हर कार्य करने वाले सदा अथक और बन्धनमुक्त भव

220. अविनाशी अतीन्द्रिय सुख में रह सबको सुख देने और सुख लेने वाले मास्टर सुखदाता भव

221. सब कुछ बाप हवाले कर संगमयुगी बादशाही का अनुभव करने वाले अविनाशी राजतिलक अधिकारी भव

222. पहाड़ जैसी बात को भी एक बाबा शब्द की स्मृति द्वारा रूई बनाने वाले सहजयोगी भव

223. हर एक को प्यार और शक्ति की पालना देने वाले प्यार के भण्डार से भरपूर भव

224. भाग्य की नई-नई स्मृतियों द्वारा पुरूषार्थ में रमणीकता का अनुभव करने वाले मन दुरूस्त भव

225. अपनी शुभ और शक्तिशाली भावनाओं द्वारा विश्व परिवर्तन करने वाले विश्व कल्याणकारी भव

226. एकान्त और एकाग्रता के अटेन्शन द्वारा तीव्रगति से सूक्ष्म सेवा करने वाले सच्चे सेवाधारी भव

227. सर्व योग्यताओं द्वारा स्वयं को वैल्युबुल बनाने वाले बेफिकर बादशाह भव

228. सच्ची दिल से बाप को राजी करने और सदा राजी रहने वाले राजयुक्त भव
229. अलौकिक जीवन की स्मृति द्वारा वृत्ति, स्मृति और दृष्टि का परिवर्तन करने वाले मरजीवा भव
230. देह-अभिमान के त्याग द्वारा सदा स्वमान में स्थित रहने वाले सम्मानधारी भव
231. पास्ट, प्रेजन्ट और फ्युचर को जान मायाजीत बनने वाले मास्टर त्रिकालदर्शा भव
232. स्व-स्थिति की शक्ति से किसी भी परिस्थिति का सामना करने वाले मास्टर नॉलेजफुल भव
233. निर्विघ्न स्थिति द्वारा वायुमण्डल को पावरफुल बनाने वाले मास्टर सर्वशक्तिमान् भव
234. निश्चयबुद्धि बन हलचल में भी अचल रहने वाले विजयी रत्न भव
235. करावनहार की स्मृति द्वारा सदा बेफिक्र बादशाह बनने वाले निश्चयबुद्धि निश्चिंत भव
236. अलौकिक स्वरूप की स्मृति द्वारा अलौकिक कर्म करने वाले सदा समर्थ आत्मा भव
237. सदा दिलखुश मिठाई खाने और खिलाने वाले सच्चे सेवाधारी खुशमिजाज भव
238. अलौकिक स्वरूप की स्मृति द्वारा अलौकिक कर्म करने वाले सदा समर्थ आत्मा भव
239. रूहानी गुलाब बन चारों ओर रूहानियत की खुशबू फैलाने वाले आकषर्ण मूर्त भव
240. मन को अमन वा दमन करने के बजाए सु-मन बनाने वाले दूरादेशी भव
241. नेचुरल अटेन्शन वा अभ्यास द्वारा नेचर को परिवर्तन करने वाले सिद्धि स्वरूप भव
242. सब व्यर्थ चक्रों से मुक्त रह निर्विघ्न सेवा करने वाले अखण्ड सेवाधारी भव
243. अलौकिक रीति की लेन-देन द्वारा सदा विशेषता सम्पन्न बनने वाले फ्राख़दिल भव
244. स्वइच्छा और दृढ़ संकल्प से एक देकर पदम लेने वाले चतुरसुजान भव
245. प्रवृत्ति में रहते एक बाप के साथ कम्बाइन्ड रहने वाले देह के संबंधों से निवृत्त भव
246. महावीर बन संजीवनी बूटी द्वारा मूर्छित को सुरजीत करने वाले शक्तिवान भव
247. किलयुगी वायुमण्डल में रहते हुए उसके वायब्रेशन से सेफ रहने वाले स्वराज्य अधिकारी भव
248. ज्वाला रूप की याद द्वारा स्वयं को परिवर्तन कर ब्राह्मण से फरिश्ता, सो देवता भव
249. मालिक बन कर्मेन्द्रियों से कर्म कराने वाले कर्मयोगी, कर्मबन्धनमुक्त भव
250. अपने अनादि संस्कारों को इमर्ज कर सर्व समस्याओं को पार करने वाले उड़ता पंछी भव
251. लौकिक को अलौकिक में परिवर्तन कर घर को मन्दिर बनाने वाले आकर्षणमूर्त भव
252. दया भाव को धारण कर सर्व की समस्याओं को समाप्त करने वाले मास्टर दाता भव
253. व्यक्त भाव से ऊपर रह फरिश्ता बन उड़ने वाले सर्व बन्धनों से मुक्त भव
254. संगमयुग के इस नये युग में हर सेकण्ड नवीनता का अनुभव करने वाले फास्ट पुरूषार्थी भव
255. कम्बाइन्ड रूपधारी बन सेवा में खुदाई जादू का अनुभव करने वाले खुदाई खिदमतगार भव

256. अल्पकाल के संस्कारों को अनादि संस्कारों से परिवर्तन करने वाले वरदानी महादानी भव
257. करनकरावनहार की स्मृति से विघ्नों के बीज को समाप्त करने वाले समर्थ आत्मा भव
258. हर एक के स्वभाव-संस्कार को जान, टकराने के बजाए सेफ रहने वाले मा. नालेजफुल भव
259. बैलेन्स द्वारा ब्लिसफुल जीवन का साक्षात्कार कराने वाले सर्व की ब्लैसिंग के पात्र भव
260. हिम्मत के संकल्प द्वारा माया को हिम्मतहीन बनाने वाले हिम्मतवान आत्मा भव
261. प्रवृत्ति में रहते भी समर्पित हो सेवा की धुन में रहने वाले बापदादा के दिलतख्तनशीन भव
262. उमंग-उत्साह द्वारा विघ्नों को समाप्त करने वाले बाप समान समीप रत्न भव
263. अपनी चलन और चेहरे द्वारा सेवा करने वाले निरन्तर योगी निरन्तर सेवाधारी भव
264. क्लीयर बुद्धि द्वारा हर बात को परख कर यथार्थ निर्णय करने वाले सफलता मूर्त भव
265. याद और सेवा द्वारा सब चक्करों को समाप्त कर शमा पर फिदा होने वाले सच्चे परवाने भव
266. बुद्धि के चमत्कार द्वारा आकार में साकार का अनुभव करने वाले दिलाराम के दिलरूबा भव
267. स्नेह के जादू द्वारा निर्बन्धन को भी बंधन में बांधने वाले श्रेष्ठ जादूगर भव
268. एक ही समय मन-वाणी और कर्म द्वारा साथ-साथ सेवा करने वाले सफलता सम्पन्न भव
269. अपने पन के अधिकार की अनुभूति द्वारा अधीनता को समाप्त करने वाले सर्व अधिकारी भव
270. अनेक प्रकार की आग से बचने और सर्व को बचाने वाले सच्चे रहमदिल भव
271. ट्रस्टी बन लौकिक जिम्मेवारियों को निभाते हुए अथक रहने वाले डबल लाइट भव
272. बाप समान बेहद की वृत्ति रखने वाले मास्टर विश्व कल्याणकारी भव
273. अखण्ड स्मृति द्वारा विघ्नों को विदाई देने वाले मास्टर सर्वशक्तिमान भव
274. ब्रह्मा बाप के कदम पर कदम रख हद को बेहद में समाने वाले बेहद के बादशाह भव
275. बाप के हर डायरेक्शन वा कायदे से फ़ायदा लेने वाले मर्यादा पुरूषोत्तम भव
276. स्वयं को अवतरित हुए अवतार समझ सदा ऊंची स्थिति में रहने वाले अर्श निवासी फरिश्ता भव
277. दिव्य बुद्धि और रूहानी दृष्टि के वरदान द्वारा नम्बर वन लेने वाले श्रेष्ठ पुरूषार्था भव
278. दिव्य बुद्धि के वाहन द्वारा तीनों लोकों की सैर करने वाले ज्ञान स्वरूप विद्यापति भव
279. एक ही संकल्प में स्थित हो महातीर्थ की प्रत्यक्षता करने वाले जिम्मेवार आत्मा भव
280. पवित्रता की विशेष धारणा द्वारा अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करने वाले ब्रह्मचारी भव
281. दिल के सच्चे सम्बन्ध द्वारा यथार्थ साधना करने वाले निरन्तर योगी भव
282. साधना और साधन के बैलेन्स द्वारा अपनी उन्नति करने वाले ब्लैसिंग के अधिकारी भव
283. अपनी विल पावर द्वारा हर एक को विल कराने वाले श्रेष्ठ सेवाधारी भव
284. साथ रहेंगे, साथ जियेंगे.. इस वायदे की स्मृति द्वारा कम्बाइन्ड रहने वाले सहजयोगी भव
285. करावनहार की स्मृति द्वारा बड़े से बड़े कार्य को सहज करने वाले निमित्त करनहार भव

286. हर कर्म का बोझ बाप पर छोड़ स्वयं ट्रस्टी बन रहने वाले डबल लाइट फरिश्ता भव
287. हर आत्मा को सेकण्ड में मुक्ति-जीवनमुक्ति का अधिकार दिलाने वाले मास्टर सतगुरू भव
288. अपनी श्रेष्ठ स्थिति द्वारा भटकती हुई आत्माओं को श्रेष्ठ ठिकाना देने वाले लाइट स्वरूप भव
289. मर्यादा पुरूषोत्तम बन सदा उड़ती कला में उड़ने वाले नम्बरवन विजयी भव
290. मेरे-पन की स्मृति से स्नेह और रहम की दृष्टि प्राप्त करने वाले समर्थी सम्पन्न भव
291. बुद्धि रूपी विमान द्वारा सेकण्ड में तीनों लोकों का सैर करने वाले सहजयोगी भव
292. अभ्यास की एक्सरसाइज द्वारा सूक्ष्म शक्तियों को जीवन में समाने वाले शक्ति सम्पन्न भव
293. अटूट याद द्वारा सर्व समस्याओं का हल करने वाले उड़ता पंछी भव
294. दिल में एक दिलाराम को बसाकर सहजयोगी बनने वाले सर्व आकर्षण मूर्त भव
295. एक बाबा शब्द की स्मृति द्वारा कमजोरी शब्द को समाप्त करने वाले सदा समर्थ आत्मा भव
296. मेरे को तेरे में परिवर्तन कर सदा हल्का रहने वाले डबल लाइट फरिश्ता भव
297. अपने मस्तक बीच सदा बाप की स्मृति इमर्ज रखने वाले मस्तकमणि भव
298. मास्टर नॉलेजफुल बन 5 हजार वर्ष की जन्म पत्री को जानने वाले स्वदर्शन चक्रधारी भव
299. अपने आदि और अन्त दोनों स्वरूप को सामने रख खुशी व नशे में रहने वाले स्मृति स्वरूप भव
300. स्वयं को बेहद की स्टेज पर समझ सदा श्रेष्ठ पार्ट बजाने वाले हीरो पार्टधारी भव
301. सदा स्नेह और सहयोग द्वारा अविनाशी रत्न का टाइटल प्राप्त करने वाले अमर भव
302. एक हिम्मत की विशेषता द्वारा सर्व का सहयोग प्राप्त कर आगे बढ़ने वाली विशेष आत्मा भव
303. समीप सम्बन्ध और सर्व प्राप्ति द्वारा सहजयोगी बनने वाले सर्व सिद्धि स्वरूप भव
304. मन को श्रेष्ठ पोजीशन में स्थित कर पोज़ बदलने के खेल को समाप्त करने वाले सहजयोगी भव
305. शुभ संकल्प के यन्त्र द्वारा साइलेन्स की शक्ति का प्रयोग करने वाले सिद्धि स्वरूप भव
306. शान्ति के अवतार बन विश्व में शान्ति की किरणें फैलाने वाले शान्ति देवा भव
307. रूहानी एक्सरसाइज द्वारा वेट (बोझ) को समाप्त करने वाले समान और समीप भव
308. वाणी और मन्सा दोनों से एक साथ सेवा करने वाले सहज सफलतामूर्त भव
309. दिव्य बुद्धि के बल द्वारा परमात्म टचिंग का अनुभव करने वाला मास्टर सर्वशक्तिमान भव
310. अटेन्शन और अभ्यास के निज़ी संस्कार द्वारा स्व और सर्व की सेवा में सफलतामूर्त भव
311. हर आत्मा से आत्मिक अटूट प्यार रख स्नेह सम्पन्न व्यवहार करने वाले सफलतामूर्त भव
312. महावीर बन हर संकल्प को स्वरूप में लाने वाले सदा विजयी सफलतामूर्त भव
313. स्वयं को बदलने की भावना द्वारा सभी बातों में विजय प्राप्त करने वाले सफलता स्वरूप भव
314. एक बल एक भरोसे के आधार से सफलता प्राप्त करने वाले मास्टर सर्वशक्तिमान भव
315. हंस आसन पर बैठ हर कार्य करने वाले सफलता मूर्त विशेष आत्मा भव

316. अपने भरपूर स्टॉक द्वारा सबको शुभभावना-शुभ कामना की गिफ्ट देने वाले मास्टर भाग्य विधाता भव
317. नये ते नये, ऊंचे ते ऊचे संकल्प द्वारा नई दुनिया की झलक दिखाने वाले श्रेष्ठ आत्मा भव
318. बाबा शब्द की डायमण्ड "की"(चाबी) द्वारा सर्व खजाने प्राप्त करने वाले परमात्म स्नेही भव
319. तपस्या और सेवा द्वारा भविष्य राज्य-भाग्य का सिंहासन लेने वाले सिंहासनधारी भव
320. हर गुण वा शक्ति को अपना स्वरूप बनाने वाले बाप समान सम्पन्न भव
321. परमार्थ के आधार पर व्यवहार को सहज बनाने वाले भाग्यवान आत्मा भव
322. "पहले आप" के विशेष गुण द्वारा सर्व के प्रिय बनने वाले सफल मूर्त भव
323. यथार्थ श्रेष्ठ हैन्डलिंग द्वारा सर्व की दुआयें प्राप्त करने वाले सर्व के स्नेही भव
324. मन्सा-वाचा और कर्मणा तीनों सेवाओं में खाते जमा करने वाले यज्ञ स्नेही भव
325. स्नेह की लिफ्ट द्वारा उड़ती कला का अनुभव करने वाले अविनाशी स्नेही भव
326. अपने सहयोग के स्टॉक द्वारा हर कार्य में सफलता प्राप्त करने वाले मास्टर दाता भव
327. संस्कार मिटाने और मिलाने में एवररेडी रहने वाले रूहानी सेवाधारी भव
328. तीनों कालों,तीनों लोकों की नॉलेज को धारण कर बुद्धिवान बनने वाले विघ्न-विनाशक भव
329. एक शमा के पीछे परवाने बन फ़िदा होने वाले कोटों में कोई श्रेष्ठ आत्मा भव
330. ट्रस्टी पन की स्मृति से हर परिस्थिति में एकरस स्थिति का अनुभव करने वाले न्यारे प्यारे भव
331. हद की दीवारों को पार कर मंज़िल के समीप पहुँचने वाले उपराम भव
332. दिव्य बुद्धि के वरदान द्वारा अपने रजिस्टर को बेदाग़ रखने वाले कर्मों की गति के ज्ञाता भव
333. सदा यथार्थ श्रेष्ठ कर्म द्वारा सफलता का फल प्राप्त करने वाले ज्ञानी, योगी तू आत्मा भव
334. अपनी उदारता द्वारा सर्व को अपने पन का अनुभव कराने वाले बाप समान सर्वंश त्यागी भव
335. समय के महत्व को जान व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तित करने वाली नॉलेजफुल महान आत्मा भव
336. अपने फीचर द्वारा अनेकों का फ्युचर श्रेष्ठ बनाने वाले श्रेष्ठ सेवाधारी भव
337. फ़ालो फादर कर नम्बरवार विश्व के राज्य का तख़्त लेने वाले तख़्तनशीन भव
338. नथिंगन्यु की स्मृति से सब प्रश्नों को समाप्त कर बिन्दी लगाने वाले अचल अडोल भव
339. सन्तुष्ट रहने और सर्व को सन्तुष्ट करने वाले शुभ भावना शुभ कामना सम्पन्न भव
340. सदा बिज़ी रह हर कदम में पदमों की कमाई जमा करने वाले मायाजीत भव
341. स्वमान के साथ निर्माण बन सबको मान देने वाली पूज्यनीय आत्मा भव
342. आगे पीछे सोच समझकर हर कार्य करने वाले ज्ञानी तू आत्मा त्रिकालदर्शी भव
343. अपने शुभ भावना के संकल्प से हर आत्मा में उत्साह भरने वाले सच्चे सेवाधारी भव
344. हिम्मतऔरउत्साहद्वाराहरकार्यमेंसफलताप्राप्तकरनेवालेमहानशक्तिशालीआत्माभव
345. "मेरा बाबा" इस संकल्प द्वारा हर कदम में मदद का अनुभव करने वाले निश्चयबुद्धि भव

346. सूक्ष्म शक्तियों द्वारा स्थूल कर्मेन्द्रियों को संयम नियम में चलाने वाले स्वराज्य अधिकारी भव

347. किसी से किनारा करने के बजाए सर्व का सहारा बनने वाले विश्व कल्याणकारी भव

348. सदा अपने आप में शुभ उम्मीदें रख दिलशाह बनने वाले बड़ी दिल, फ्राकदिल भव

349. इच्छा मात्रम अविद्या की स्थिति द्वारा मास्टर दाता बनने वाले ज्ञानी तू आत्मा भव

350. अपने हर्षित चेहरे द्वारा प्रभू पसन्द बनने वाले खुशियों के खजाने से संपन्न भव

351. "मेरा बाबा" के स्मृति स्वरूप द्वारा समर्थियों का अधिकार प्राप्त करने वाले समर्थ आत्मा भव

352. दिल के स्नेह और सम्बन्ध के आधार पर समीपता का अनुभव करने वाले निरन्तर योगी भव

353. प्राप्तियों की इच्छा से इच्छा मात्रम् अविद्या बन सदा भरपूर रहने वाले निष्काम सेवाधारी भव

354. मैं-पन के दरवाज़े को बन्द कर माया को विदाई देने वाले निमित्त और निर्माण भव

355. रियलाइज़ेशन द्वारा निर्बल से शक्तिशाली बनने वाले मास्टर सर्वशक्तिमान भव

356. कमज़ोर संकल्पों की जाल को समाप्त कर परतन्त्रता के बन्धन से मुक्त होने वाले स्वतन्त्र आत्मा भव

357. अपनी हिम्मत के आधार पर उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ने वाले श्रेष्ठ तक़दीरवान भव

358. उड़ती कला के वरदान द्वारा सदा आगे बढ़ने वाले सर्व बन्धन मुक्त भव

359. अनुभवों की सम्पन्नता द्वारा सदा उमंग-उल्लास में रहने वाले मा. आलमाइटी अथॉरिटी भव

360. अथॉरिटी के आसन पर स्थित रह सहजयोगी जीवन का अनुभव करने वाले महान आत्मा भव

361. अपने चेहरे रूपी दर्पण द्वारा मन की शक्तियों का साक्षात्कार कराने वाले योगी तू आत्मा भव

362. बिन्दू रूप बाप की याद से हर सेकेण्ड कमाई जमा करने वाले पदमापदमपति भव

363. अपने पूर्वज स्वरूप की स्मृति द्वारा सर्व आत्माओं को शक्तिशाली बनाने वाले आधार, उद्धारमूर्त भव

364. अखण्ड योग की विधि द्वारा अखण्ड पूज्य बनने वाली श्रेष्ठ महान आत्मा भव

365. सर्व हदों पर विजय प्राप्त कर कर्मातीत स्वरूप का अनुभव करने वाले विजयी रत्न भव

# 365 वरदान

**(01/01/2013 to 31/12/2013)**